IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक दर्शन

*शरद कुमार

शोधछात्र, शिक्षा विभाग, प्रो. एच. एन. मिश्रा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, कानपुर

** डॉ. संदीप कुमार श्रीवास

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, प्रो. एच. एन. मिश्रा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, कानपुर

सारांश: –

स्वतंत्रता के पूर्व जन्मे पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अपने विचारो एवं व्याख्यानों से जिस नवीन एवं मौलिक दर्शन की नीव देश में रखी वो निश्चित रूप से ही देश को एक नयी दिशा प्रदान करती हैं तथा देश में व्याप्त खायी को भरने एवं व्याप्त समस्यों के लिए पथ प्रदर्शक का काम करती है। पंडित जी द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानव दर्शन ने समग्र विश्व को एक सूत्र में पिरोने का काम किया हैं और इसी मनोभाव से उन्होंने शिक्षा की दिशा भी तय की है जिसमे उन्होंने शिक्षा के प्रत्येक पहलू पर खुलकर अपने विचार रखे हैं अतः प्रस्तुत शोध पत्र संपूर्ण समाज एवं प्रत्येक वर्ग को उनके शिक्षा विचार से लाभान्वित करने हेतु प्रस्तुत किया गया हैं

मुख्य शब्द– *शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा का पाठ्यक्रम, स्त्री शिक्षा, शिक्षण विधि।*

प्रस्तावना : –

पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने शिक्षा को एक ऐसी कड़ी माना हैं जिसके माध्यम से संपूर्ण समाज में प्यार एवं भाईचारा की स्थिति हो क्यूंकि एक स्वस्थ समाज में ही स्वस्थ विचारधारा का प्रवाह हो सकता है और यही विचारधारा एक व्यक्ति को स्वकेंद्रण से प्रकेंद्रण की ओर लेकर जाती है और सम्पूर्ण जगत को एक सूत्र में पिरोती है। दीनदयाल जी की दृष्टी में शिक्षित होने वाले प्रत्येक व्यक्ति का आचरण दूसरे शिशु से भिन्न होता है अतः शिक्षा प्रदान करते समय बालक की व्यक्तिक विभिन्नता का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। साथ ही व्यष्टि और समष्टि में अंतर करते हुए उन्होंने कहा है कि – ॅयदि हजार अच्छे व्यक्ति इकट्ठा हो जाये तो वो एक जैसा ही विचार करेंगे ऐसा नहीं कहा जा सकता।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय चाहते थे कि समाज को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे उनके अंदर संगठन और त्याग की भावना जागृत हो सके और मानव को मानसिक गुलामी के बंधनों से मुक्त कराया जा सके। जान डीवी ने भी कहा है कि शिक्षा के अपने कोई उद्देश्य नहीं होते हैं फिर भी व्यक्ति या समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उनका निर्माण किया जाता है। शिक्षा के द्वारा मूल्य व्यक्ति के व्यवहार का निर्धारण करने वाली शक्ति के रूप में माना जाता है तथा इनमें समाज की सहमति या असहमति भी निहित होती है भारतीय संस्कृति में मानव के द्वारा अनुभूत किसी भी आवश्यकता की पुष्टि का जो भी साधन है वह मूल्य है। मूल्य सैद्धांतिकए सामाजिकए धार्मिकए शैक्षिक तथा राजनीतिक आदि हो सकते हैं जो शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं।

शिक्षा द्वारा बालक में मूल्य विकसित किये जा सकते हैं यदि बालकों को आरंभ से ही मूल्यों का ज्ञान कराया जाए तो उनका ग्रहणशील मन उन मूल्यों को शीघ्र ही आत्मसात कर लेगा तथा उनमें सभी अच्छे मूल्य विकसित हो जायेंगे अर्थात यदि मानवताए परोपकारए सत्यए दया और सहनशीलता इत्यादि मूल्यों को बचपन से ही बालकों से परिचय करा दिया जाए तो इन मूल्यों को अपने आचरण में उतार लेंगे। इसी क्रम में सी.वी. गुड ने लिखा है कि मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिकए सामाजिक और सौंदर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। कनिंघम के विचार में शिक्षा के मूल्य ही शिक्षा के लक्ष्य होते हैं। स्वामी विवेकानंद ने भी कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य एवं चरित्र का निर्माण है।

मानव समाज में अस्तित्व की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष तथा प्रतिस्पर्धा होती आई है इसके परिणाम स्वरूप मानव की नैतिक चेतना का एक निश्चित प्रतिमान विकसित हुआ है। यदि प्रतिमान मूल्यों के विकास का मूल आधार है तो मूल्यों के आधार पर ही व्यक्ति स्वयं के आदर्शों और उद्देश्यों का निर्धारण कर उनको प्राप्त करने का प्रयास करता है।

मन को प्रशिक्षित करना ही शिक्षा नहीं है प्रशिक्षण कार्य कुशलता तो लाता हैए पर वह पूर्णता नहीं ला सकता है, जो मन केवल प्रशिक्षण में रहा हो वह वास्तव में अतीत को ही ढो रहा होता है ऐसा मन कभी भी नवीन की खोज नहीं कर सकता। इसी कारण यह जानने के लिए ही उचित शिक्षा क्या है? हमें जीवन प्रक्रिया के संपूर्णता की जांच करने पड़ेगी। हम में से अधिकांश व्यक्तियों के लिए इसका कोई मूलभूत महत्त्व नहीं है कि समग्र रूप में जीवन का क्या अर्थ है, हमारी शिक्षा मूल्य पर ही जोर देती है तथा ज्ञान के किसी खास हिस्से में ही से वह हमको एक कार्य कुशल मानव बनाती हैं। कार्यकुशलता यदि प्रेम से प्रेरित है तो वह काफी दूर तक प्रभावी होती है और यह महत्वाकांक्षा से प्रेरित कार्य क्षमता से कहीं श्रेष्ठ होती है जबकि जीवन के समन्वित बोध को जन्म देने वाले प्रेम के अभाव में कार्यकुशलता कठोरता को ही जन्म देती हैं। जानकारी इकट्ठी या एकत्रित करना एवं तथ्यों को आपस में मिलाना ही शिक्षा नहीं है शिक्षा तो जीवन के अभिप्राय को उसकी समग्रता में देखना समझना है परंतु किसी समग्रता को उसके टुकड़ों के माध्यम से नहीं देखा जा सकता।

समाज पर आधारित ही शिक्षा का निर्माण होता है समाज एक ऐसी संस्था है जो समय और काल के अनुकूल परिवर्तित होती रहती है तथा प्राचीन या मध्यकाल में जो सामाजिक व्यवस्था थी वह आज नहीं है और आज जो है वह स्थान और प्रदेश के अनुकूल समाज का अलग-अलग रूप दिखाई देता है जिस

कारण सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल वहां की शिक्षा व्यवस्था का निर्माण होता हैए स्थानए कालए परिवेश और संस्कृति आदि का परिणाम शिक्षा पर निर्भर रहता है इसके परिवर्तन से शिक्षा में परिवर्तन होता है।

पंडित दीनदयाल जी यह भी कहते हैं कि कभी कम मानसिक क्षमता वाले विद्यार्थी का उपहास नही करना चाहिए क्यूंकि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी कार्यक्षमता हैं जिसका वो विकास कर समाज में अपना योगदान दे सकते हैं इस प्रकार शिक्षा की ऐसी दसायें उत्पन्न करनी चाहिए जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास संभव हो सके। पंडित दीनदयाल जी ने कहा हैं कि सामजिक पर्यावरण से अलग व्यक्तिकता का कोई मूल्य नहीं होता हैं और व्यक्तित्व अर्थहीन शब्द है क्यूंकि इसी में इसको विकसित और कुशल बनाया जाता हैं। अतः इनका मानना था कि – श्सामाजिक रूप से कुशल बनाना ही शिक्षा का सिद्धांत हैं क्यूंकि वंशानुक्रम से पाशविक प्रवृतियों को नाश करने की योग्यता उसे समाज से ही मिलती हैं एवं एक नए समाज का निर्माण भी शिक्षा के द्वारा ही होता है।श्[४] अतः पंडित जी के अनुसार शिक्षा के द्वारा बालक में परस्पर सहयोग की भावना का विकास करना चाहिए समाज के प्रती बलिदान की भावना को प्रेरित करना चाहिए। पंडित जी ने धार्मिक शिक्षा का पूर्णतः समर्थन किया हैं। उनके अनुसार धर्म तो एक व्यापक तत्व हैं उससे समाज की धारणा होती है इश्वर का अवतार भी धार्मिक शिक्षा देने के लिए होता अतः श्शिक्षा में धार्मिक शिक्षा का समावेशन होना चाहिए तभी बालक बड़ा होकर समाज क लिए कुछ कर सकता हैं।श् पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अनुसारए शिक्षा का स्वरुप ऐसा होना चाहिए जो मानव को आत्मिक सुख की प्राप्ति तथा मनुष्य को सभी प्रकार के दुःख से मुक्ति दिला सके। उनका कहना था कि शिक्षा का स्वरुप ऐसा हो जो बालक को धन लोलुप न बनाकर उसे पुरुषार्थो की सिद्धि योग्य बनाये एवं सदैव ही उसे समाज में कुछ देने योग्य बनाये।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार शिक्षा के स्वरुपः-

शिक्षा का उद्देश्यः

चूँकि पंडित जी का संपूर्ण जीवन दर्शन ही राष्ट्रप्रेम प्रेम पर आधारित हैं अतः उनके शैक्षिक उद्देश्य का निर्धारण भी राष्ट्रप्रेम एवं व्यक्ति के एकमात्र लक्ष्य सुख की प्राप्ति पर आधारित हैं। दीनदयाल जी कहते है किए श्शरीरए मनए बुद्धिए आत्मा इन सब का विकास शिक्षा क द्वारा होना चाहिए।

1. राष्ट्र प्राप्ति
2. चारित्रिक विकास
3. प्राचीन संस्कृति की अक्षुणता
4. राष्ट्र प्रेम
5. मातृभाषा का विकास
6. लोक कल्याण

शिक्षा का पाठ्यक्रम:-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि पाठ्यक्रम का स्वरुप ऐसा होना चाहिए जो राष्ट्रप्रेम की भावना से ओत प्रोत हो जो व्यक्ति को स्व की भावना से निकालकर संघ की भावना तक ले जाये तथा पाठ्यक्रम में संस्कृतिए सांस्कृतिक क्रियाओं तथा सामुदायिक क्रियाओं को शामिल करना चाहिए। साथ ही दीन दयाल जी यह भी कहते हैं कि सभी धर्मो और सम्प्रदायों का मत एक ही है श्परमसुखश अर्थात् ईश्वर की प्राप्तिए इसलिए पाठ्यक्रम में धर्म को शामिल करना चाहिए साथ ही उपाध्याय जी का ये भी कहना था कि श्संप्रदाय को पाठ्यक्रम से अलग रखना चाहिए क्यूंकि संप्रदाय व्यक्ति को पक्षपाती एवं व्यक्ति अपने कर्तव्य से भटक जाता हैं।श

सैन्य शिक्षाए कृषि शिक्षाए इंजीनियरिंग की शिक्षाए तकनीकी शिक्षाए औद्योगिक शिक्षाए व्यवसायिक शिक्षाए सामाजिक शिक्षा यातायात एवं जनसंख्या की शिक्षा आदि को भी विषयवस्तु में शामिल करने क पक्ष में थे ताकि देश का प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। उनके द्वारा लिखित पुस्तक श्भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा में उन्होंने लिखा हैए श हमारे देश की ये भी ज़रुरत है की हम आर्थिक क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बने किसी अन्य देश की पूँछ न पकड़े।श पंडित दीन दयाल जी शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में रखने के पक्ष में थे क्यूंकि उनका मानना था कि शक्तिशाली व्यक्ति से ही शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण हो सकता हैं।

शिक्षा का स्थान:-

पंडित दीन दयाल ने अपनी पुस्तक में लिखा है किए श्शालेय शिक्षा अकेली ही मनुष्य का निर्माण नहीं करती संस्कार और अध्यापन का बहुत सा ऐसा क्षेत्र हैं जो शालेय क्षेत्र के बाहर हैं।श अर्थात् बालक का विकास सिर्फ विद्यालय में जाकर नहीं हो सकता वह अपने समाजए राष्ट्रए परिवारए राज्य आदि भी उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और बालक का सर्वांग विकास होता हैं अतः पंडित जी पब्लिक स्कूल के विरोधी थे।

शिक्षा का स्वरुप:-

दीन दयाल जी तीनो स्तर (प्राथमिकए माध्यमिक एवं उच्च स्तर) की शिक्षा के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रम निर्धारित किये हैं।

प्राथमिक स्तर की शिक्षा के विषय में पंडित दीन दयाल का कहना हैं कि इस स्तर की शिक्षा गीतोंए कहानियोंए कथाओए आदि के माध्यम से की जानी चाहिए जिससे बच्चो में नैतिकताए सदाचारए क्रियाशीलताए सृजनशीलता का विकास हो सके तथा श्उनकी समस्त शिक्षा क्षेत्रीय भाषा तथा मातृभाषा में होनी चाहिए जिससे उनमे समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना विकसित हो।श

माध्यमिक स्तर की शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था तथा देख-रेख शिक्षाविद द्वारा किया जाना चाहिए तथा राजकार्य हिंदी में होना चाहिए यदपि अंग्रेजी भाषा इसी स्तर से शुरू होना चाहिए परन्तु अंग्रेजी पढने का दबाव नहीं होना चाहिए। पंडित जी का कहना था श्इस स्तर की शिक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को दो भाषाओ का ज्ञान अवश्य होना चाहिए जिसमे प्रथम भाषा हिंदी हो।श

उच्च स्तर की शिक्षा भी हिंदी में होना चाहिए एवं उच्च स्तर पर आसीन व्यक्ति भी हिंदी भाषी होना चाहिए क्यूंकि उच्च शिक्षा पर आसीन व्यक्ति यदि अंग्रेजी को वरियता देगा तो हिंदी भाषा का पतन होगा और हम गुलामी की तरफ बढ़ते चले जायेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन की दृष्टि से पंडित जी का मत हैए श्कुलपतियों के पदों पर शिक्षाविदो को ही नियुक्त किया जाये।

सह शिक्षा:-

पंडित जी एकात्म मानव दर्शन के उपासक हैं अतः उनके विचार में कोई भी व्यक्ति किसी से छोटा-बड़ा नहीं और न ही किसी में कोई भेद है सब ईश्वर की रचना है अतः वो स्त्रीए पुरुषए बलए वृद्धए युवाए अपंग आदि सभी को एक ही साथ लेकर चलने की बात करते है। समाज का कोई भी पक्ष किसी कारन से पीछे न रह जाये अतः स्त्री और पुरुष दोनों को ही साथ में शिक्षा देने के पक्ष में थे जिसका स्पष्ट उदहारण शिशु मंदिरों में देखा जा सकता हैं। पंडित जी ने कहा है किए श्नवभारत की रचना में स्त्रियों की उपेक्षा नही की जा सकती।श

स्त्री शिक्षा:-

वाहन रूपी समाज के स्त्री और पुरुष दो पहिये हैं अतः पंडित दीनदयाल उपाध्याय का कहना है कि समाज का प्रत्येक घटक शिक्षक हैं और व्यक्ति जिस घटक से सबसे पहले सीखता है वो माँ होती हैं। अतः पंडित जी स्त्री को भी समाज का अंग मानकर पुरुष के समान ही स्त्रियों की शिक्षाए समानताए और सम्मान के समर्थक थे।

शिक्षण विधि:-

पंडित जी ने बहुत सारी शिक्षण विधियों के द्वारा पाठ्यक्रम को पढ़ाने की बात कही हैं जैसे:-

1ण **आगमन एवं निगमन पद्धति** को ध्यान अपनाने पर जोर देते हुए पंडित जी कहते है कि बालक को पहले छोटे छोटे उदहारण देकर पाठ्यवस्तु को समझाने की कोशिश की जानी चाहिए तत्पश्चात उन्हें नियम का प्रयोग करना सीखाना चाहिए।

2ण **मनोवैज्ञानिक पद्धति** पर जोर देते हुए पंडित जी का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति की मनःस्थिति को समझकर एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओ को ध्यान में रखकर ही शिक्षा देनी चाहिए।

3ण **मातृभाषा शिक्षण विधि** पर जोर देते हुए पंडित जी का कहना था कि व्यक्ति अपने विचारों की अभिव्यक्ति अपनी भाषा में ही बेहतर तरिके से कर सकता हैं क्यूंकि भाषा का हर एक शब्दए

रचनाए लिकोक्ति क पीछे समाज के जीवन की अनुभूतियाँ एवं राष्ट्र की घटनाओ का इतिहास छुपा होता हैं फिर भी मातृभाषा व्यक्ति को अलग अलग प्रकोष्ठों में नहीं बाँटती।

4ण **व्याख्यान विधि** को शिक्षण विधि के रूप में स्वीकार करते हुए पंडित जी कहते हैं कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में व्याख्यान विधि का बहुत महत्व हैं।

5ण **दृश्य श्रव्य सामग्री** का उपयोग करने पर पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने जोर दिया है एवं अपनी पुस्तक **राष्ट्रचिंतन** में कहा है कि दृश्य-श्रव्य सामग्री प्राचीन काल से चली आ रही हैं जैसे कथाए कीर्तनए नाटक एवं वर्तमान में रेडियोए सिनेमा एवं समाचार पत्र आदि आते हैं।

सारांश:-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के लिए हम कह सकते है वे एक कुशल समर्पित शिक्षाविद थे जिन्होंने अपने विचारो को धरातल पर लाने के साथ ही उसे व्यवहारिक जीवन में लाये हैं। उनका मानना था कि समाज में व्याप्त बुराइयों को शिक्षा के द्वारा ही दूर किया जा सकता है वह शिक्षा चाहे औपचारिक होए अनौपचारिक हो उन्होंने कहाः श्हमारी आँखों के सामने एक महान भविष्य की दृष्टि हैं इस देश के हम केवल दूरदर्शी ही नहीं कर्मयोगी भी हैं।श अतः इस महान योगदान के बाद भी पंडित दीनदयाल जी का शिक्षा जगत में बहुत कम व्याख्यान किया गया है जिसकी वर्तमान में महती आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शर्माए डॉ. महेशचंद्रए श्पंडित दीन दयाल उपाध्याय कर्तृत्व एवं विचारश प्रभात प्रकाशन 2015ए पृष्ट. 313.

2. उपाध्यायए पंडित दीनदयालए श्राष्ट्रचिन्तनश पृष्ठ. 95.

3. मिश्राए डॉ. विनोदए पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्एकात्म मानव दर्शनश पृष्ठ. 100.

4. शर्माए डॉ. महेशचंद्रए श्पंडित दीन दयाल उपाध्याय कर्तृत्व एवं विचारश दार्शनिक अभिधारणा ध्धर्मः प्रभात प्रकाशन 2015ए पृष्ट. 375-376.

5. उपाध्यायए पंडित दीनदयालए श्एकात्म मानवदर्शनश एकात्म मानववादए पृष्ठ. 29.

6. शर्माए डॉ. महेशचंद्रए श्पंडित दीन दयाल उपाध्याय कर्तृत्व एवं विचारश ध्दार्शनिक अभिधार्नाएंः प्रभात प्रकाशन 2015ए पृष्ट. 377.

7. उपाध्यायए पंडित दीनदयालए श्भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशाश लोकहित प्रकाशन लखनऊए पृष्ठ. 11.

8. उपाध्यायए पंडित दीनदयालए श्पोलिटिकल डायरीश स्वभाष और सुभाषाए सुरुचि प्रकाशनए नयी दिल्लीए पृष्ठ. 92.

9. शर्माए डॉ. महेशचंद्रए श्पंडित दीन दयाल उपाध्याय कर्तृत्व एवं विचारश ष्केशव कुञ्जष्ए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा पृष्ठ. 159.